Review Of Research
Vol.2, Issue. 11, Aug. 2013
ISSN:-2249-894X
Available online at www.reviewofresearch.net

ORIGINAL ARTICLE

नागार्जुन के उपन्यास साहित्य में यथार्थ बोध

शंकर ए. राठोड

प्राध्यापक, स.प.पू.कॉलेज जेवर्गी, जिला–गुलबर्गा

सारांशः

हिंदी के आधुनिक काल के प्रगतिशील काव्य धारा के प्रतिनिधि साहित्यकार के रूप में नागार्जुन का नाम आदर के सात लिया जाता है । प्रगतिपरक कविता के तीन प्रमुख लेखक नागार्जुन, त्रिलोचन एवं अग्रवाल तीनों ने अपनी रचना संसार एवं अभिव्यक्त के कारण कविता के इतिहास में 'त्रयी' नाम से पहचाने जाते है । जब दोनां महायुध्दों के समय के बिच की अवधि छायावाद कविता का चरमलक्ष्य को प्राप्त कर चुका था तो उस लक्ष्यहिन कल्पना में समाहित कविता को उस जंलाल से निकलकर नवीन राह दिखानेवाला कवि साहित्यकार, नागार्जुन रहे हैं । नागार्जुन को अगर देखपाये तो उसके नाम के सब एक विशेशता जुडती है वही प्रगतीशील रचनाएँ समाज के यथार्थ पर चलता है । रूढीयों, अनैतिकता एवं परंपरा पर प्रहार करती हुई आज के सामाजिक समस्या पर विचार कर उसका समाधान करने का काम प्रगतीशील रचना करती हैं ।

प्रास्ताविक :

' नागार्जुन ' बिहार के, मिथीला प्रांत से संबंध रखते है । उनका जन्म उसी प्रांत के 'सतलखा ' मधुबनि गॉव जिला धरभंगा में ई. 1911 में आधुनिक कबीरदास कहलानेवाला नागार्जुन का जन्म हुआ । बचपन का नाम वैद्यनाथ मिश्र था, पिता गोकुल एवं माता उमादेवी थे। बचपन नैनिहाल में बिता, मॉ–बाप का कोई लाड प्यार नागार्जुन को मिल नहीं पाया ।

प्रगतिवादी नागार्जुन का विवाह ई. 1931 मे वार्षिया अपराजिता के साथ होता है । प्राथमिक शिक्षा गॉव के पाठशाला में होता है । 1936 को नागार्जुन श्रीलंका जाकर बौध्द धर्म स्वीकार कर, बौध्द धर्म का अध्ययन करते हैं । फिर काशी के विश्वविद्यालय में अध्ययन करके कम्यूनिस्ट पार्टी के सिध्दांत से सदस्यता गृहण किया । नागार्जुन भारत की बहुत सी भाषाओं का अध्ययन करने के कारण सभी भाषा को समझ पाते थे । नागार्जुन ने जयप्रकाश नारायण के व्यक्तित्व से प्रभावित थे और नारायण के साथ किसान ऑदोलन में नागार्जुन भाग लेते है । ई. 1951 मे नागार्जुन वर्धा के राष्ट्रभाषा प्रचार कार्य में लग गये । जयप्रकाश की कांति में जेल गये फिर रहीहा हुए । इस प्रकार बहुआयामी व्यक्तित्ववाला नागार्जुन का देहांत ई. नवंमबर 5, 1998 में हुआ ।

आधुनिक कबीर नागार्जुन के व्यक्तत्व के प्रकार उसका साहित्यिक क्षेत्र भी विविधरूप है। उन्होंने साहित्य के सभी विधओंपर अपनी लेखनी चलाई है । कविता, उपन्यास, नाटक, निबंध, संस्मरण, यात्रावृत्त, आलोचना सभी विधाओं में नागार्जुन अपना महत्वपूर्ण योगदान दिये है । फक्कड व्यक्तित्ववाला नागार्जुन का साहित्य संसार भी एक प्रकार फक्कडपन का प्रतीक है। नागार्जुन जब लिखना आरंभ किया भारत देश के राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में क्रांति का समय था, देश अंग्रेजों की मुट्ठी में तडप रहा था, अंग्रजी शासन की, फुटडाल नीति ने आपस में हिन्दु–मुसलमान को लडाते रहें । नागार्जुन इस परिस्थितियों से भली–भांती परिचित थे, उस पीडा को स्वयं भोग चुका थे इस कारण नागार्जुन मार्क्सवाद विचारधारा को अपना लिया था । उनकी रचनाएँ उपन्यास हो या नाटक या अन्य, उन्होंने हमेशा उसमें देश हित का चिंतन किया है । नागार्जुन का सारा साहित्य विशेष चिंतन किया है । नागार्जुन का सारा साहित्य विशेष कर देश की व राजनीतिक व्यवस्था के विशय को लेकर लिखा गया है । उनके सभी उपन्यास साहित्य में राजनीतिक गंदकी को दर्शाया है । भ्रष्टाचार, नक्सलवाद, शोशकवर्ग के विरोध में लिखा गया है । नागार्जुन हमेशा दलित, पीछडा वर्ग का वकालत किया है । नागार्जुन जीवन पर्यंत जात–पात का विरोध किया है ।

नागार्जुन ने दर्जनों उपन्यास लिखे है उनमें प्रमुख है –

1. रतिनाथ की चाची, 2. बलचनामा, 3. बाबु बटेरसरनाथ, 4. दुःखमोचन, 5. वरुणा के बेटे, 6. कुंभीपाक, 7. उग्रतारा, 8. हीरक जयंति आदि । मैं उपर कह चूका हूं कि नागार्जुन के उपन्यास का विशयवस्तु ज्यादातर राजनीति से संबंधित है और वह यथार्थ समस्या पर प्रकाश डालते है । साहित्यकार समाज में चलनेवाली घटनाओं से अछूता नही रहता सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियां उस साहित्यकार पर गहरा असर डालती है और नागार्जुन इससे अछूते नहीं रहे है ।

नागार्जुन अपने उपन्यासों में तत्कालिन राजनीतिक समस्या, दरिद्रता, अत्याचार, शोशक, राजनीतिक दंगो प्रस्तुत किया है । नागार्जुन का प्रथम उपन्यास है ' रतिनाथ की चाची ' इस उपन्यास में ' रतिनाथ की चाची ' पात्र द्वारा उस प्रदेश के ब्राह्मण संस्कार एवं उनकी नैथ्तकता पर प्रहार किया है । इस उपन्यास में अगर स्त्री विधवा होने पर उसे कितना कष्ट उठाना पडता है, उसे दूसरा विवाह का अधिकार नहीं हैं और वहीं पुरुष विवाहित होकर भी और अनेक स्त्रियों के साब अनैतिक संबंध रखता है या विवाह भी करता है । इस उपन्यास की बडी त्रासदी यह है कि विधवा समस्या । विधवा रतिनाथ की चाची देवर के जाल में फॅसकर गौरी नामक वह विधवा अभावग्रस्थ जीवन बिताती है । विधवा स्त्री की स्थिति इस ब्राह्मण परिवार में किस प्रकार कि है उसका प्रतिनिधित्व कराती है गौरी । गरीबी एवं यौन अतृप्ति पीडा को झोलती हुई गौरी

Title: *नागार्जुन के उपन्यास साहित्य में यथार्थ बोध*
Source:Review of Research [2249-894X] *शंकर ए. राठोड* **yr:2013 vol:2 iss:11**

अपना सारा जीवन व्यतित करती है । आज समाज में बहोत सी गौरी झूठी

सभ्यता एवं परंपरा के कारण इन उपर्युक्त समस्याओं से तडप रही है । गौरी की मॉ गौरी के बारे में कहती है '' दरिद्र कूल में लडकी ब्याहने का, यह दुश्परिणाम था ।'' कोई क्या करे लोग हमारा ?बिटियन को प्याज की तरह जमीन में दबाकर नहीं रख सकती । '' 1

रतिनाथ की चाची उपन्यास में और यथार्थ पात्र बुधना चोरी से अपना बच्चा का पालन–पोशण करती है । जब गर्भवती के बारे में गौरी की मॉ कहती – '' हमारी बिरादरी में आठ–नौ महिनों का बच्चा निकालकर जंगल में फेंक आने का रिवाज नहीं है । और तुम्हारा कैसा मन होता ।''[2] आज अनैतिकता के कारण बहोत सी लडकिया गर्भ को नष्ट करना और जन्मे बच्चे को नाले में फेंक आना सामान्य है । शायद आलोचक कहते है कि ' रतिनाथ की चाची ' उपन्यास कथा की घटनाएं नागार्जुन की अपनी घटना बनी है ।

नागार्जुन को दूसरा और उपन्यास ' बलचनामा ' में मजदूर एवं कृशक जीवन की कहानी है । जमींदार किस प्रकार किसानों का शोषण करते है इसे बलचनामा दर्शाता है । इस उपन्यास का नाम बलचनामा एक जग शोषक लोगों की व्यवहार पर कहता है– '' मालिक के दरवाजे पर मेरे पिता को एक खंबे से बॉधकर उसके छाती, झांग, पीठ पर बॉस की हरी कैली के निशान उभर आये थे ।''[3] बलचनामा के पिता मालिक बाग में फल तोडता, इस कारण पिता के मृत्यु के बाद भी बलचनामा उसका कर्ज चुकाने के लिए उसके घर नौकर बनता है । आज बहोत से छोटे उम्र के बच्चे उसके पिता के कर्ज का शिकार बनकर मालिक के शोषण के शिकार बन जाते है जैसा बलचनामा । बलचनामा उपन्यास का सबसे प्रमुख सत्य यह है कि समाज की व्यवस्था, गरीबी एवं अभाव के कारण आज बहोते से बच्चे चोरी करते है, भिख मांगते है । यह समस्या आजकी नहीं प्राचीन समय से चला आ रहा है और नागार्जुन इसे अपनी ऑखो से देखा था वही उपन्यास का विषय बनाया है । कई लोग मालिक का कर्ज न चुकाते हूए, आत्महत्या के शिकार हो जाते है । आज की पीढी इस समस्या से पीढीत है । बलचनामा कहता है – '' गरीबी नरक है भैया, नरक चावल के चार दाने छींटकर बहेलिया जैसी चिडियॉ को फॅसाता है । उसी तरह दौलवाले फॅसाते है । ''[4] जमींदार व्यवस्था एवं गरीब किसान को शोषित करने वाला यर्था समस्या है । जमींदारी व्यवस्था पर प्रेमचंद गोदान जैसे उपन्यास में यथार्थ रुप से चित्रण किया है । महाजनील सभ्यता एवं जमींदारी व्यवस्था पर एक प्रकार की आपत्ती जनक चिंता प्रेमचंद ने अपने उपन्यास के होरी द्वारा किया है । इस उपन्यास में बलचनामा अंत तक संघर्शरत दिखाई पडता है ।

' बाबा बटेसरनाथ ' उपन्यास में नागार्जुन का यथार्थता का चित्रण हमें दिखाई पडता है। बाबा बटेसरनाथ नागार्जुन का एक अलग प्रकार का उपन्यास है । नागार्जुन इस उपन्यास में प्रचजित सामाजिक समस्या को यथार्थ रूप से दर्शाया है । भारत देश कि ग्रामीण जनता एवं गॉवों का स्थिति–गति को प्रस्तुत किया है । आज भी गॉव के लोग हर प्रकार के शोशित है । धर्म के नाम पर, परंपरा के नाम पर, देव–देवतांओ के नाम पर लोग ठगे जा रहे है । अंधश्रध्दा, अनैतिकता के कारण गॉव के लोग आज भी पराधीन है । बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में नागार्जुन एक वटवृक्ष का ही इस उपन्यास का नायक बनाकर उस वृक्ष द्वारा इस गॉव की बीती भूत का बारिकी से लोगों को सुनता हुआ उस समय की घटना को यथार्थवादी चित्रण नागार्जुन ने किया है । बाबा बटेसरनाथ मूक विस्मय होकर उस गॉव में होनेवाले घटना को देख रही है और वह स्वयंम दुःखी है किस प्रकार राजनीतिक लोक, पोलीसवाले लोग, पडे–लिखे लोक गॉव वालों का फंसाते है और गॉववालों का शोषण होता है । वह वृक्ष आज कल का नही वर्षों से, पीढियों से एक सत्या के प्रतिक बनकर खडा है । वह वृक्ष एक बार इस गॉव की एक घटना को सुना है ''कुछ दिनों बाद सुना कि बडे घराने की एक बाल विधवा उस पर अपना तन–मन निछावर कर चुकी थी, पकडे जाने पर वह कत्ल कर दिया गया और अगले ही रोज लडकी तालाब में डूबकर मर गयी ।''[5]

ठस उपन्यास की कथा भी जमींदार के शोषण से मुक्त नहीं हैं । गरीब किसान उनके अन्याय एवं अत्याचार के शिकार है । इस सब समस्याओं एवं अनैतिकता का विरोध बटेसरनाथ करता है वह नागार्जुन का रूप है । उस समय नागार्जुन इस हालात पर बहोते दुःखित थे कि वे मार्क्सवाद को अपना लेते हैं । आजादी की लढाई एवं एक ओर तो आंतरिक शक्ति को शोषण दूसरी और भोली–भाली जनता की जिंदगी को नरक बना चुकी थी । आजादी के बारे में स्वयंम वटवृक्ष बाबा कहते है – '' आजादी मिला है हमारे अग्रमोहन बाबू को, कॉग्रेस के टिकट पर चुने गये उन्हें आजादी मिली है ।''[6] यहा वृक्ष एक प्रतीकात्मक रूप चित्रित हुआ है।

नागार्जुन का और एक यथार्थ उपन्यास ' वरूणा के बेटे ' । इस उपन्यास द्वारा नागार्जुन मछुआ जन–जीवन पर लिखा गया उपन्यास है । मछुआरा इतने महेनत के बाद भी कोई अमीर नहीं बन पाते वे हमेशा अपने पालन–पोशण के लिए न दिन, न रात को देखते, न गर्मी, न सर्दी बर्फ, तुफान में भी जिंदगी से संघर्ष करते रहते है । लेखक इन मछुआरों के क्षरा आज की इन्सानियत की दैनिक जीवन को प्रस्तुत किया है । इस उपन्यास में स्वतंत्रता भारत की भ्रश्टाचारी कानून के सहारे, स्वार्थ नेता पर नागार्जुन कडा प्रहार किया है । मछुओं भी आम जनता है और वे जीवनभर संघर्षरत है । जब बाड, या कोई व्यक्ति आफत में फंसता है तो उनकी सहायता करते है उनका भाव निस्वार्थ है ।

दुःखमोचन में नागार्जुन मिथिला प्रांत की यथार्थ चित्रण किया है । उस गॉव में वर्ग विषमता है उसका मूख्य कारण है असमानता । लोग आर्थिक एवं सामाजिक असमानता के कारण संघर्श कर बैठते है । दुःखमोचन एक यथार्थवादी व्यक्तित्व के साथ उभरा है । दुःखमोचन अपना सारा जीवन सामाजिक सेवा में लगा देता है । गॉव में जब कोई आफत आती तो दुःखमोचन वहां हाजिर रहता है । दुःखमोचन परंपरा विरोधी पात्र है । विधवा समस्या को खतम करने के कारण, विधवा विवाह करवाता है । इसका विरोध गॉव वाले करते है – ''यह कैसा जमाना आया है । जात–पात और धर्म–करम पर संकट ही संकट लडता चला आ रहा है कल के छोकरे हम बुढों के नाक में कोडी बॉध रहे हैं ।''[7] दुःखमोचन को सारा गॉव समाज एवं परंपरावादी लोगों का विरोध सहना पडता है । दुःखमोचन उस गॉव को विकास की ओर ले जाना चाहता है । दुःखमोचन कहता है– '' मै महसूस करता हूँ कि अपने गॉव एक–एक व्यक्ति की सुरक्षा का दायित्व हम पर है । ''[8]

कुंभीपाक उपन्यास में नागार्जुन ने नाम के प्रकार अनैतिक व्यवहार को नरक कहा है । भ्रश्टाचार से आनेवाला धन और बुरा काम कुंभीपाक है । इस उपन्यास में नागार्जुन यह बताया है कि वह कुंभीपाक से बचने के लिए विधवा एवं निराश्रित स्त्रियों का विवाह कर देना चाहता है। इस उपन्यास को नागार्जुन में यह दर्शाया है कि बडी–बडी बाते करनेवाले समाज के लोग अपने स्वार्थ के लिए बेचारी गरीब लडकियों की मजा लेने के लिए कुंभीपाक में डाल देते है । इस कोटी के स्वार्थ लोगों को श्राप देते हुए नागार्जुन कुंती क्षरा कहलाता है – '' क्यों औरत बिकती है ? क्या उन पर डाक बोली जाती है ?क्यों उन्हें बोरे के अंदर कैद रखा जाता है ?मुझे और तुम्हे किसने बर्बाद किया ?''[9] इस प्रकार इस उपन्यास की यथार्थ यह है की शोशित लोगों का आक्रोश दिखाई देता है, बदले की भावना नजर आती है । इस उपन्यास में स्त्री सशक्तिकरण का वकालत इसमें नजर आजा है । लेखक का कहना है कि जब तक स्त्रियॉ आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त नही करती जब तक वे उस समाज के पूंजीवादी, नेता, जमींदार लोगों की हवन का शिकार बनी रहती है । इस कुंभीपाक नरक से निकलकर समाज में गौरव हासिल करने की प्रेरणा देते है ।

नागार्जुन ' नई पौंदे ' जैसे उपन्यासों में अनमेल जैसी यथार्थ समस्या को दर्शाया है। आज समाज के अमीर लोग भी अपनी संतानों का लालच के कारण अनमेल विवाह करके उनकी जिंदगी को नरक में डकेल देते हैं । इस उपन्यास का पात्र खोका पंडित द्वारा इस समस्या का यथार्थ चित्रण किया है । गॉव की स्त्री उस विवाह का विरोध करती है – '' दुल्हे को आने दो उस बुढे के माथे पर अंगारे न डालु तो रामसेरी मेरा नाम नही ।''[10] पारों उपन्यास भी स्त्री की स्थितिगति पर लेखक नाराजगी व्यक्त की है । आर्थिक अभाव के कारण स्त्री को किस प्रकार की तकलिफों को झेलना पडता है । वे सारा जीवनभर जिंदा लाश बनकर जलती रहती है । उसकी खुशी उसे मृत्यू के पास लाकर खडा कर देती है । नागार्जुन पारों के व्यक्तित्व द्वारा आज की अनमेल विवाह का नरक जीवन का यथार्थ चित्रण किया है ।

निष्कर्ष :–

' नागार्जुन ' नाम ही एक यथार्थ के साथ लिया जाता है । जब तक व्यक्ति उस घटना से बीतता नहीं, उसे जब तक महसूस करता नहीं तो उसकी लेखनी कल्पान के सहाने इतनी छोटी–छोटी सी गहराई में झांकती नही । व्यक्ति के पास अभिव्यकित के लिए उस समस्या से गजरना पडता है । अतः नागार्जुन के सभी उपन्यासों यथार्थबोध के उपन्या सवे कल्पना शक्ति के दूर समाज के समस्त व्याप्त समस्या, ऑखो–देखी को व्यक्त किया है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1.रतिनाथ की चाची – नागार्जुन
2.रतिनाथ की चाची – नागार्जुन
3.बलचनामा – नागार्जुन
4.बलचनामा – नागार्जुन
5.बाबा बटेसरनाथ – नागार्जुन
6.बाबा बटेसरनाथ – नागार्जुन
7.दुःखमोचन – नागार्जुन
8.दुःखमोचन – नागार्जुन
9.कुंभीपाक – नागार्जुन
10.कुंभीपाक – नागार्जुन